रिकॉर्डः– तुम्हारे बुलाने को..... ॐ पिताश्री 20/5/65

ओम् शांति। लाडले बच्चे ये जानते हैं हम आत्माएँ आशूक हैं उस एक माशूक बाप के। बच्चे जानते हैं कि आशूक और माशूक का संबंध कितना तीखा होता है। वो जिस्मानी आशूक जो होते हैं वो जिस्म पर आशूक होते हैं। विकार के लिए नहीं। बच्चे जानते

20/5/65 4

हैं जब कोई की शादी होती है तो भल स्त्री–पुरुष कहलाते हैं; परन्तु वो आशूक–माशूक है एक/दो को ज़हर पिलाने (लिए)। पहले से ही उनको पता है कि हम जाते हैं विकारी बनने। जब कुमार–कुमारी हैं तो निर्विकारी हैं। समझते हैं हम सगाई करते हैं एक/दो को ज़हर पिलाने। अभी तुम बच्चे आशूक बने हो एक माशूक के, जो सभी आत्माओं का माशूक है। सभी उस एक के आशूक हैं। सब भक्त आशूक हैं एक भगवान के; परन्तु भक्तों को भगवान का पता नहीं। भगवान को ना जानने कारण शक्ति आदि उनसे पा नहीं सकते। साधु–संत आदि पवित्र रहते हैं तो उनको कुछ न कुछ अल्प काल लिए मिलता है। तुम तो याद करते हो एक माशूक हो। उनसे बुद्धियोग लगाया जाता है जो बाप भी है, शिक्षक भी है, पतित–पावन, सर्वशक्तिवान है। उस बाप से तुम बच्चे योग लगाए शक्ति लेते हो। तुम्हारा ज्ञान ही अलग है। शक्ति लेते हो माया पर जीत पाने लिए। ऐसा जो विश्व का मालिक बनाने वाला माशूक है। ये कितना मीठा है। जिन्होंने बाप को अपना बनाया है वह जानते हैं कितना अच्छा माशूक है जिसको आधा कल्प से सभी याद करते हैं। वो जिस्मानी आशूक–माशूक तो एक जन्म के होते हैं। तुमने तो आधा कल्प याद किया है। अभी तुमने बाप को जाना है तो तुमको बहुत शक्ति मिल रही है। तुम श्रीमत पर चल स्वर्ग का श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मालिक बनते हो। आशूक बनती है आत्मा। कर्तव्य आत्मा करती है कर्मइन्द्रियों से। अभी तुम बच्चों को यही धुन लगी हुई है कि बाप से वर्सा लेना है। विख की लेन–देन लिए जो हथमाला बाँधते हैं वो बाप ने आकर कैसल किया है। कहते हैं इन सब बातों को छोड़ अब मुझे याद करो। जिस्मानी आशूक को भी हर समय खाते–पीते, उठते–बैठते माशूक की याद रहती है ना। उनमें बुरी भावना नहीं होती है। विकार की बात नहीं है। अभी तुम याद करते हो एक को। याद की पुरुषार्थ अनुसार तुम अपनी आयु बढ़ा सकते हो। समझो, कोई ब्राह्मण कहे तुम्हारी आयु 50 वर्ष है। बाप कहते हैं तुम अभी योगबल से अपनी आयु बढ़ा सकते हो। जितना योग में रहेंगे उतनी आयु बढ़ेगी। फिर भविष्य जन्म–जन्मांतर बड़ी आयु वाले बन जावेंगे। योग नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़ती है। फिर पद भी कम होता है। भल सुखी तो सब बनेंगे; परन्तु योग और पढ़ाई में फर्क सारा पद का रहता है। जितना पुरुषार्थ उतना ऊँच पद। धन तो नम्बरवार होगा ना। एक जैसे सभी धनी तो हो ना सकते। तो बाप समझाते हैं– बच्चे, जितना हो सके श्रीमत पर चलो। आधा कल्प तुम आसुरी मत पर चले हो, जिससे तुम्हारी आयु कमती हो गई है। भल कितना भी बड़ा आदमी हो, आज जन्म लिया, कल मर गया। दान–पुण्य करने से बड़े घर में जन्म मिलता है ना। अभी बाप तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दे झोली भर रहे हैं। तुम कितने साहुकार बनते हो। यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान कहो अथवा वर्सा कहो, बाप को(से) मिल रहा है। तुम बाप से वर्सा लेते हो तो तुमको फिर औरों को रास्ता बताना है। भगवान के हम बच्चे हैं। ज़रूर भगवान–भगवती पद मिलना चाहिए। भारत में गॉडेस लक्ष्मी, गॉड नारायण। नई दुनिया में गॉड–गॉडेस राज्य करते हैं; क्योंकि गॉड द्वारा पद मिला हुआ है; परन्तु बाप समझाते हैं अगर उनको गॉड–गॉडेस कहेंगे तो यथा राजा तथा प्रजा को भी गॉड–गॉडेस कहना पड़े। इसलिए देवी–देवता कहा जाता है। तुम जानते हो हम भारत स्वर्ग बना रहे हैं श्रीमत द्वारा। हम राजयोग सीख रहे हैं, फिर राजभाग पावेंगे। परमात्मा ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो ज़रूर नर्क में आवें तब तो नर्क को स्वर्ग बनावें। जो कल्प पहले बने होंगे वो ही आवेंगे। सब एक जैसे तो नहीं होते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ करते हैं। आजकल तो बच्चे पान का बीड़ा उठाते हैं। बाबा फलानी बच्ची को बहुत मार पड़ती है। हम उनको बचाने लिए युगल बन जाते हैं। अभी यह तो ठीक है। दोनों अपनी

सर्विस में लग जाएँगे; परन्तु यह ..... कैसे हो कर्मइन्द्रियों पर कितनी ..... पहनी है। आग–कपूस की परीक्षा कैसे हो। बाबा खुद लिखते हैं कायर मत बनो। अपनी परीक्षा लो काम की आग तो नहीं लगती है। बहादूर बनना चाहिए। भल कोई पवित्र भी रहते हैं फिर ज्ञान की धमक भी चाहिए। धारणा चाहिए। जितना वारिस और प्रजा बनावेंगे, काँटों को फूल बनाना है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे बहुत विलायत में भी रहते हैं। कम्पैनियन हो रहे पवित्र रहते हैं। फिर से मिल्कियत स्त्री को दे देते हैं वा तो चैरिटी में दे जाते हैं। ऐसे बहुत ट्रस्ट बना जाते हैं। गरीबों को (मिलता) रहता है। पैसे बहुत हैं तो दान करेंगे ना। जानते हैं दान करेंगे तो अच्छे घर जन्म लेंगे। सो भी दान बहुत अच्छा करेंगे तब अच्छे घर में जन्म लेंगे। समझो, 10 करोड़ है, दो/तीन करोड़ दान करेंगे तब अच्छे घर में जन्म मिल सकता। गरीब तो अपनी ताकत अनुसार ही करते हैं। समझो, गरीब दो मुट्ठी चावल देते हैं, साहुकार एक हज़ार देते हैं तो दोनों का इक्वल हो जाता है। अभी तुम बच्चों को माशूक मिला है प०पि०प०, जो तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। तो उनकी कितनी याद रहनी चाहिए। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। तुम ही बाप को जानते हो। और कोई भी साधु–संत आदि बाप को नहीं जानते। यहाँ बाप बच्चों के सन्मुख बैठे हैं। वो तो सर्वव्यापी आदि कह बहुत बकवाद करते रहते हैं। बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। कितने ढेर सन्यासी होंगे, नागे भी बहुत होते हैं। उन्हों के संस्कार ही ऐसे रहते हैं गृहस्थी पास जन्म ले फिर वैराग आने से सन्यास धर्म में चले जाते हैं। भल पवित्र रहते हैं; परन्तु वो पवित्रता का बल नहीं मिल सकता, जितना तुम बच्चों को पतित–पावन बाप से मिलता है; क्योंकि बाप को नहीं जानते। आत्मा सो परमात्मा अथवा ब्रह्म ही परमात्मा है ऐसे कह देते हैं। अनेका अनेक मत–मतांतर है। यहाँ तुम सबकी एक मत है। ..... मनुष्य से देवता बनने की मत मिलती है बाप द्वारा। बरोबर मनुष्य को देवता बनाने में देर नहीं लगती। मूत पलीती मनुष्यों को आकर पवित्र बनाते हैं। ..... तो है ना। बाकी शास्त्र तो बहुत सुनते–पढ़ते आए हैं। उनमें कोई सार नहीं, कोई फल नहीं मिलता। पढ़ते–2 दुर्गति को पा लिया है। अभी बाप आया है तो उनका सच्चा–2 आशूक बनना चाहिए। बुद्धियोग और कहाँ भटकना ना चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो; परन्तु कमल फूल समान। भक्तिमार्ग में तो कोई हनुमान को, गणेश को, कोई किसको पकड़ते आए हैं; परन्तु वो कोई भगवान तो नहीं हैं। भल शिवबाबा का नाम भी याद है; परन्तु समझते नहीं हैं। परमात्मा को भित्तर–ठिक्कर में ठोक दिया है। सूत ही सारा मूँझा हुआ है। सिवाय बाप के कोई उसको सुलझा नहीं सकते। भगवान किसको भी मिलता नहीं है। स्वयं भगवान कहते हैं जब भक्ति पूरी हो तब तो मैं आऊँ। आधा कल्प भक्तिमार्ग चलता है दिन और रात। शास्त्रों में भी चक्कर दिखाया है; परन्तु उसकी आयु उल्टी–सुल्टी लिख दी है। समझते कुछ भी नहीं हैं। बाबा में भी पहले–2 जब प्रवेशता हुई तो दिवारों पर ऐसे–2 चक्र निकालते रहते थे जैसे छोटे बच्चे होते हैं। समझ में कुछ नहीं आता था। हम तो सब बेबीज़ थे। फिर धीरे–2 बुद्धि में आता गया। अभी तुम पढ़कर होशियार हुए हो तो बिल्कुल सहज रीति समझा सकते हो। ऐसे नहीं समझना यह बहुत पुराने हैं; इसलिए हमसे होशियार हैं। हम तो इतना पढ़ ना सकेंगे। बाबा कहते हैं पिछाड़ी में आने वाले बहुत आगे जा सकते हैं। देरी से आने वाले और ही दिन–रात योग में मस्त हो लग पड़ेंगे। दिन–प्रतिदिन प्वाइंट्स बहुत अच्छी–2 मिलती रहती हैं। प०पि०प० स्वर्ग का रचता है तो उससे वर्सा मिलना चाहिए ना। सतयुग में था, अभी नहीं है तब तो बाप फिर देने आए हैं। कितने उपाय किए जाते हैं कि बच्चों को कुछ समझ में आ जाए और योग में लग जाए। कोई कहते हमको फुर्सत नहीं। अरे, कमाई के लिए कहते हो फुर्सत नहीं! इस याद से ही तुम सदैव लिए निरोगी बनोगे। तो इस धंधे में लग जाना चाहिए ना। इसमें स्थूल कुछ भी

करने का ना है। लौकिक बाप की याद में रह सकते हैं। पारलौकिक बाप को भूल जाते हो। बाप कहते हैं तुम भारतवासियों को(ने) 5000 वर्ष पहले भी वर्सा लिया था ना। तुम विश्व के मालिक थे, क्या यह भूल गए हो। तुम सूर्यवंशी थे फिर चंद्रवंशी... बने। अब फिर ब्राह्मण वंशी बनाने आया हूँ। ब्राह्मण बनेंगे तब तो यज्ञ को सम्भालने के अधिकारी बनेंगे। फिर तुम पतित कैसे बन सकते। तुमको तो जां जी तां पवित्र रहना है। यज्ञ की संभाल करनी है। ब्राह्मण कब विकारी बन ना सकते। अंत तक पवित्र रहना है तब नई दुनिया का मालिक बन सकेंगे। कितनी भारी प्राप्ति है। तुम बाप को याद नहीं करते हो। बच्चा बनकर और बाप को याद ना करे ऐसा तो कब होता नहीं। बाप को भूल जावेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा। यह तो आमदनी है ना। साधु–संतों आदि पास तो प्राप्ति कुछ नहीं है। सिर्फ पवित्रता का बल है। ईश्वरीय बल नहीं है। ईश्वर को जानते ही नहीं तो बल मिले कैसे? तुमको बल मिला है। बाप खुद कहते हैं हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने आए हैं। तुम थोड़े समय लिए पवित्र नहीं रह सकते हो? क्रोध है सेकण्ड नम्बर भूत। बड़े ते बड़ा भूत है काम पतितपने का। सतयुग में भारत वाइसलेस था तो कितना सुखी था। विकारी बना है तो अब भारत का क्या हाल हुआ है। ऐसे बाप को याद करना तुम भूल जाते हो। माया फट से विकर्म करा देती है। बड़ी भारी मंजिल है। तुम ऐसे बाप की श्रीमत पर नहीं चलते हो। ऐसे बाप से प्यार नहीं है। कहते हैं भूल जाते हैं। अच्छा, एक घड़ी, आधा... कम (से) कम इतनी तो कोशिश करो जो अंत में बाप की याद रहे। ये अन्तकाल है। अन्तकाल जो नारायण सिमरे...। मैं नारायण बनता हूँ तुम भी बनते हो ना। पढ़ाने वाला शिवबाबा है। कहते हैं– बाबा, हम ज़रूर नारायण बनेंगे। तो बाप कहते हैं पूरे आशूक भी बनो ना। बाप तो दाता है। बाप को अपना बनावेंगे तो बाप राय अथवा मत देंगे। सौतेले को तो मत नहीं देंगे। बाप तो दाता है। तुम्हारे से कुछ लेते हैं क्या? तुम जो करते हो सब अपने लिए। मैं तो विश्व का भी मालिक नहीं बनता हूँ। ऐसे कभी भी नहीं समझना कि शिवबाबा को देते हैं। नहीं। शिवबाबा से वर्सा लेते हैं। सिर्फ (समय) दान करते हैं ना। करनीघोर को सब दे देते हैं। तुम्हारे पास है ही क्या? ठिक्कर–ठोबर दान करते हो परमात्मा को। तुम्हारे यह सब खतम हो जाने हैं। मरने से डरते तो नहीं हो ना। बाप कहते हैं इस छी–2 दुनिया से मरना अच्छा है ना। 5000 वर्ष पहले भी मच्छरों सदृश्य सबको ले गए थे। मैं तुम्हारा कालों का काल, बाप भी हूँ। तुमको काल के चम्बे से छुड़ाता हूँ। वहाँ तो आत्मा स्वतंत्र रहती है। जब शरीर पुराना हो तब छोड़कर नया ले लेते हैं। अभी भी समझते हैं बाबा पास जाना है। ये तो गंदी छी–2 दुनिया नर्क है। बाबा आया है स्वर्ग में ले चलने। कहते हैं पवित्र बनो और मुझे याद करो; परन्तु तुम याद नहीं करते हो। सवेरे उठकर बाबा से बातें करो। बाबा आपकी तो कमाल है! स्वप्न में भी नहीं था कि आप आकर हमको स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। हम तो बिल्कुल घोर अंधियारे में थे। बाबा आप तो कमाल करते हो। हम आपकी शिक्षा पर ज़रूर चलेंगे। कोई भी पाप का काम नहीं करेंगे। काम के भूत को पहले लात मारेंगे। पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। बाबा, मीठे बाबा, हम आपकी मदद लिए हाज़िर हूँ। ऐसी–2 बातें करनी होती है। जैसे बाबा .... करते हैं। बच्चों को सुनाते हैं। बाबा हम नंगे आए थे, अभी याद पड़ा। आपने स्वर्ग में भी भेजा, 84 जन्म पार्ट बजाया। अभी दुखधाम में आए पहुँचे हैं। अभी फिर से हम नंगे बनते हैं; क्योंकि अब वापिस जाना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए इस पुरानी दुनिया को भूलने का पुरुषार्थ करना है। शिवबाबा को इतने ढेर बच्चे हैं। ओना तो होगा ना। **B** को भी ओना होगा ना। कितने ढेर बच्चे हैं, कितनी संभाल करनी होती है। बच्चे बिल्कुल आराम से रहे। यहाँ तुम ईश्वरीय घर में हो ना। कोई संगदोष नहीं। बाप सन्मुख बैठा है। तुम्हीं से खाऊँ, बैठूँ। तुम जानते हो शिवबाबा इसमें आकर हमको बच्चा–2 कहते हैं। कहते हैं मेरे लाडले बच्चे (प्रतिज्ञा) करो (विकार) में ना जाना।

पवित्रता की मुझे मदद करो तो भारत को पवित्र बनावेंगे। हिम्मदे बच्चे ..... बाबा याद नहीं आता है। कल्प–2 हम यही धंधा करते हैं। भारत को स्वर्ग बनाते हैं। जो मेहनत करेंगे वो ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। काँग्रेसियों ने बापू को कितनी मदद दी। आज देखो वह बिल्कुल ही भ्रष्टाचारी बन पड़े हैं। सब गर्वमेंट को ठगते रहते हैं। सुधरे थोड़े ही। राम राज्य बदले और ही रावण राज्य हो गया है। दुखी हो .... हैं। सब बहुत दुखी हैं। आगे यह कर्जा आदि कुछ नहीं था। अभी तो टैक्स ही टैक्स लगाते रहते। मिलता कुछ भी नहीं। मनुष्य बड़े दुखी होते हैं। दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान होते जाते हैं। बाप अब आते हैं। सुखधाम के लायक बनाते हैं। कहते हैं आधा कल्प तुम सजनियाँ काम चिक्षा पर बैठ काला मुँह कर बैठी हो। हम अभी तुम सबको गौरा बनाते हैं। फिर भी तुम काला मुँह कर देते हो। तो क्या हाल होगा! बाप से पूरा वर्सा लो, नहीं तो बहुत सज़ा खावेंगे। बड़ी कड़ी सज़ा है। बाप का बनकर और फिर नाम बदनाम करते हो तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। शास्त्रों में भी मोरध्वज, ताम्रध्वज की कथा है। तुम बच्चों को सा० कराया हुआ है कैसे सज़ा मिलेगी। (फलाने)–2 जन्म में यह–2 पाप किया है। पास विद ऑनर हो दिखाओ। जैसे तुम्हारे मम्मा–बाबा होते हैं। इसलिए फॉलो मदर–फादर। वो मदर–फादर तो विकारी हैं। यह है निर्विकारी। तो फॉलो इनको करना चाहिए। मात–पिता को ऐसा फॉलो करो जो मात–पिता के तख्त पर बैठ दिखाओ। पारलौकिक मात–पिता से मिलने तीन–चार वर्ष भी नहीं आते हैं। स्त्री पति से थोड़ा ही अलग होती है तो फतकती रहती है। तुम सजनियाँ साजन पास 3–4 वर्ष नहीं आते हो। ऐसा कोई बच्चा होगा जो बाप को चिट्ठी ना लिखे। ऐसा साजन जो गुल–2 बनाए पटरानी बनाते हैं उनको पत्र भी नहीं लिखते हैं। ऐसा सत्गुरु जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनके पास तो जल्दी–2 आना चाहिए। चिट्ठी तो ज़रूर लिखनी चाहिए। तो बाबा भी समझे इनका योग है। ये शिवबाबा की पोस्ट ऑफिस है। लिखते हैं ना शिवबाबा **c/o** ब्रह्मा। मुसाफरी पर जाते हैं तो चिट्ठी ज़रूर लिखते हैं। ये तो घर बैठे भी चिट्ठी नहीं लिखते हैं। शिवबाबा कहते हैं– वाह! आशूक बने हो, कभी याद भी नहीं करते हो। बाबा हर प्रकार की राय भी देते रहते हैं। कोई के लिए दुआ माँगी जाती है जो अच्छा आदमी होता है। पापात्मा से कब दुआ नहीं (माँगी) जाती। तुम तो भारत को स्वर्ग बनाते हो। समझो, कोई सर्विसएबुल बच्चे हैं। उनको तकलीफ होती है तो शिवबाबा को याद करना चाहिए। बाबा अब तुम्हारा सुनते तो हैं ना। तुम्हारा डाडा है। तुम उस निराकार शिवबाबा से वर्सा ले रहे हो। तो शिवबाबा को याद किया जाता है। बाबा यह बहुत सर्विसएबुल बच्चे हैं, इनको कुछ दृष्टि दो। तो बाबा राय देते हैं, तुम सब बच्चे भी याद का बल दो। याद तो शिवबाबा को करना तो इसमें तुम्हारा भी और दूसरे का भी फायदा होगा। कर्मभोग तो पिछाड़ी तक चलता रहेगा। बाबा इनको थोड़ी दृष्टि देना वा युक्ति बताओ जो जल्दी ठीक हो जाए। बाबा युक्ति यह बताते हैं। बच्चों को भी योग का बल देना है, अपनी ताकत की दृष्टि देनी है। जैसे कि तुम आत्मा अपना रेज़ सब मिलकर देते हो, अपनी भी सेवा है, दूसरे की भी। समझो, कोई का पति नहीं आता है तो योग में रहो। बाबा इनकी बुद्धि का ताला खोलो। बाप से मदद लेनी है। डॉक्टर आदि से भी जास्ती बाबा की ताकत काम आती है। बाबा–2 करते रहने से कितना फायदा होता है। कोई भी ब्राह्मणी आदि से (रूठ)कर पढ़ाई ना छोड़नी चाहिए। पढ़ाई छोड़ी तो मरे। माया एक ही थप्पड़ से गिरा देती है। फिर लिखते हैं– बाबा, भूल हो गई। अरे, काला मुँह किया, नैलत है। पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। सारा मदार पवित्रता है। अपन को दिल दर्पण में देखना है। नई दुनिया के लिए लायक बनना है। अच्छा, बापदादा का मीठे–2 लकी सितारों प्रति यादप्यार। ॐ.....
.....